असामान्य मनोविज्ञान
B.A. II
Teacher — A.K. Sinha
Topic — असामान्य व्यवहार की विशेषताएं , पृष्ठ-1

मानवजाति के व्यवहारों पर प्रायः देश, काल, समय तथा सभ्यता एवं संस्कृति का प्रभाव तो पड़ता ही है साथ ही साथ शिक्षा का भी प्रभाव सापेक्ष रूप से देखा जाता है। कहने का तात्पर्य है कि पूरे विश्व में रहने वाले व्यक्तियों का व्यवहार, उनके समुदाय, संस्कृति, सभ्यता तथा शिक्षा से प्रभावित होने के कारण ही भिन्न दृष्टिगोचर होता है। परन्तु मनोविज्ञान की एक शाखा असामान्य मनोविज्ञान, जब एक ही समुदाय, संस्कृति, सभ्यता एवं शिक्षा स्तर में रहने वाले व्यक्तियों के व्यवहारों में अर्थ भिन्नता पाता है तो उन व्यक्तियों के मानसिक स्थिति का अध्ययन करने के लिए बाध्य होता है। असामान्य मनोविज्ञान [illegible] में असामान्य व्यवहार के कुछ विशेषताओं का उल्लेख किया गया है जो निम्नलिखित है :—

1. असामान्य व्यवहार परिस्थिति के अनुकूल नहीं होता है:— प्रायः सामान्य व्यवहार व्यक्ति परिस्थिति के अनुकूल प्रदर्शित करता है परन्तु असामान्य व्यक्ति का व्यवहार परिस्थिति के अनुकूल न होकर विपरीत होता है। यानि असामान्य व्यवहार का परिस्थिति से प्रायः सम्बन्ध विच्छेद होता है। सामान्यतः लोग दुःख की स्थिति में दुखी होते हैं तथा सुखद या आनन्ददायक अवसरों पर सुख या आनन्द का अनुभव करते हैं परन्तु असामान्य व्यक्ति का सुखद एवं दुःखद अनुभूति बिना किसी उपयुक्त परिस्थिति का होता है, कहने का तात्पर्य है कि सामान्य व्यवहार का सम्बन्ध ~~वास्ति~~ वास्तविकता से रहता है जबकि असामान्य व्यवहार का सम्बन्ध वास्तविकता से नहीं रहता है।

शेष पेज-2 पर

2. असंगत एवं असंगठित व्यक्तित्व :—
(Non-Coherent & disorganized Personality)
प्रायः सामान्य व्यवहार में व्यक्ति संगतपूर्ण व्यवहार प्रदर्शित करता है और उसका व्यक्तित्व संगठित होता है। यानि उसके व्यक्तित्व के ज्ञानात्मक क्रियात्मक तथा भावात्मक प्रक्रियाएं असंतुलित नहीं होते हैं। जबकि असामान्य व्यवहार प्रदर्शित करने वाले व्यक्ति का ज्ञानात्मक, क्रियात्मक तथा भावात्मक प्रक्रियाओं में कोई ताल-मेल नहीं होता है। यानि असंतुलित होते हैं।

3. संवेगात्मक अपरिपक्वता (Emotional Immaturity)
असामान्य व्यक्ति में संवेगात्मक अपरिपक्वता (Emotional Immaturity) स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। ऐसे लोग बिना उपयुक्त कारण के ही संवेगों को प्रदर्शित करते हैं क्योंकि संवेगों पर उनका नियंत्रण नहीं होता है।

4. सूझ की कमी (Lack of Insight) →
सामान्य व्यवहार वाले व्यक्ति को कब, क्या और कैसे कोई प्रतिक्रिया करनी है, इसका पूरी ज्ञान या समझ होती है जबकि असामान्य व्यवहार वाले व्यक्ति में इसका अभाव पाया जाता है। यानि असामान्य व्यवहार वाले व्यक्ति गलत व्यवहार या प्रतिक्रिया करने में अन्तर स्पष्ट करने में अपने को असमर्थ या असक्षम महसूस करता है। उसे नैतिक तथा अनैतिक का ज्ञान भी नहीं रहता है। वे अपने अस्तित्व का भी सूझ नहीं रहता है, वह अपने आपका सही मूल्यांकन करने में भी असमर्थ होता है।

5. – अभियोजन की अपर्याप्तता (Inadequacy of adjustment):–
प्रायः ऐसा देखा जाता है कि सामान्य व्यक्ति सभी परिस्थितियों में अपने को अभियोजित करने की क्षमता रखता है। उसका यह सतत प्रयास रहता है हर परिवेश में अपने को अभियोजित साबित करे। परन्तु असामान्य व्यक्ति का व्यवहार अनअभियोजित (maladaptive) होता है, ऐसे लोग अपने-आप को नयी परिस्थितियों में ~~उपयुक्त~~ उपयुक्त व्यवहार करने में असमर्थ महसूस करते हैं।

6. सामाजिक दृष्टिकोण से अहितकर व्यवहार (Behaviours not in keeping with Social welfare):— सामान्य लोगों का व्यवहार समाज की उन्नति और प्रतिष्ठा बढ़ाने में सहायक होता है जबकि असामान्य व्यवहार समाज की उन्नति और प्रतिष्ठा के लिए बाधक होता है। सामान्य व्यक्ति के व्यवहारों से समाज सुदृढ़ और प्रगतिशील होता है परन्तु असामान्य व्यवहार समाज को विघटित करता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि असामान्य व्यवहार समाज के लिए अहितकर होता है।

7 अपने लिए हितकर न होना (Not helpful for the Individual himself):— असामान्य व्यवहार वाले व्यक्ति खुद के प्रति लापरवाह होते हैं। उनका आत्मविश्वास में कमी देखा जाता है, ऐसे व्यक्ति वास्तविकता को समझने में असमर्थ होते हैं अतः आत्मनिर्भरता का अभाव हो जाता है। ऐसे व्यक्ति अपनी छोटी-2 आवश्यकताओं के लिए दूसरे पर निर्भर करने लगते हैं। अपना कार्य भी सफल तथा सही ढंग से निष्पादन नहीं कर पाते हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि असामान्य व्यक्ति का व्यवहार स्वयं के लिए भी हितकारी नहीं होता है।

P.T.O. →

8\. उपद्रांग व्यवहार (Bizarre Behaviour) :- प्रायः असामान्य व्यक्तियों की पहचान प्रत्यक्षतः में उनके व्यवहार से ही हो जाता है। इनके व्यवहार में एकरूपता (Uniformity), स्थिरता (Stability), संगतता (Consistancy), नियमितता (Regularity) तथा प्रासंगिकता (Relevancy) का अभाव होता है। जबकि सामान्य व्यक्तियों में उपर्युक्त सभी गुण व्यवहारात्मक रूप से परिलक्षित होते हैं। असामान्य व्यक्तियों के व्यवहार सामाजिक मान्यताओं के विपरीत तथा असंतुलित होते हैं।

9\. गलतियों के लिए पश्चाताप का अनुभव नहीं करना : (Not feeling of remorse) → असामान्य व्यक्तियों में यह स्पष्ट रूप से देखा जाता है कि वे अपनी गलतियों को स्वीकार नहीं करते हैं तथा उसके लिए उन्हें कोई पश्चाताप भी नहीं होता है। अतः उनकी गलतियों को आसानी से सुधारा नहीं जा सकता है। जबकि सामान्य व्यक्ति अपनी गलतियों को स्वीकारते हैं तथा उसके लिए पश्चाताप का भाव (feel sorry) प्रकट करते हैं और भविष्य में गलतियों में सुधार लाते हैं।

इस प्रकार उपर्युक्त व्यवहारात्मक विशेषताओं के आधार पर सामान्य तथा असामान्य व्यक्तियों की पहचान आसानी से की जा सकती है।

—— (End) ——